

## बाल-कृष्ण की अनोखी जिद्द: "मैया, मेरी शादी करवा दो!"

ब्रजभूमि में रोज़ कोई न कोई नई लीला होती थी। गोकुल की गलियां कन्हैया की किलकारियों और उनके पायलों की छम-छम से गूँजती रहती थीं। कभी कान्हा किसी के घर से माखन चुराते, तो कभी यमुना किनारे सखाओं के साथ गेंद खेलते। यशोदा मैया का पूरा दिन अपने लल्ला की देखरेख और उसकी शरारतों को संभालने में ही बीत जाता था।

एक दिन की बात है, गोकुल में एक बड़े गोप के बेटे की शादी थी। पूरे गांव को न्योता मिला था। घर-घर में मंगल गीत गाए जा रहे थे, ढोलक बज रहे थे और सब सुंदर-सुंदर कपड़े पहनकर तैयार हो रहे थे। नंद बाबा के घर में भी बड़ी चहल-पहल थी।

नन्हे कृष्ण, जो उस समय केवल पांच-छह साल के थे, आंगन में बैठकर यह सब बड़े ध्यान से देख रहे थे। उन्होंने देखा कि दूल्हा बने गोपा कुमार ने रेशमी जरीदार कुर्ता, चमकीला पीतांबर और सिर पर मोतियों से जड़ा हुआ सुंदर मुकुट (सेहरा) पहना हुआ है। उसके पीछे-पीछे पूरी बारात नाचते-गाते चल रही थी।

यह सब देखकर बाल-कृष्ण के मन में भी एक अनोखा विचार आया। उनके चेहरे पर एक शरारती मुस्कान दौड़ गई।

### **कान्हा पहुंचे मैया के पास**

जब बारात चली गई और घर में थोड़ी शांति हुई, तो यशोदा मैया रसोई में बैठकर घी के दीये साफ़ कर रही थीं। तभी कान्हा दबे पांव आए और मैया के आंचल को पकड़कर खींचने लगे।

"मैया! ओ मैया! जरा मेरी बात तो सुनो ना!" कान्हा ने अपनी सुरीली और तोतली आवाज़ में कहा।

यशोदा मैया ने मुड़कर देखा। धूल से सने हुए, घुंघराले बालों वाले अपने लल्ला को देखकर उनका दिल वात्सल्य रस से भर गया। उन्होंने कान्हा को गोद में उठा लिया और अपनी साड़ी के पल्लू से उनका मुंह पोंछते हुए बोलीं, "हां मेरे कान्हा, बोल! क्या चाहिए तुझे? फिर से भूख लगी है क्या? या सुदामा-मनसुखा से लड़ाई हो गई?"

कान्हा ने अपना सिर हिलाया और बड़ी गंभीरता से बोले, "नहीं मैया, न तो मुझे माखन चाहिए और न ही किसी से लड़ाई हुई है। मुझे तो बस... शादी करनी है! तुम जल्दी से मेरी शादी करवा दो!"

### **मैया की हंसी और कान्हा का गुस्सा**

कान्हा के मुंह से 'शादी' शब्द सुनते ही यशोदा मैया की हंसी छूट गई। वह खिलखिलाकर हंस पड़ीं। उन्होंने कान्हा के गाल थपथपाए और बोलीं, "अरे मेरे लल्ला! अभी तेरी उम्र ही क्या है? अभी तो तेरे दूध के दांत भी नहीं टूटे, और तुझे शादी करनी है? चल, जाकर बाहर खेल!"

मैया को हंसता देख कान्हा का मुंह बन गया। उन्होंने अपनी छोटी-छोटी भौंहें सिकोड़ लीं, पैर पटके और मैया की गोद से उतरकर दूर खड़े हो गए।

"तुम हमेशा मेरी बात को हंसी में उड़ा देती हो!" कान्हा ने रूठते हुए कहा। "मैंने देखा है, जो दूल्हा बनता है, उसे सब कितना प्यार करते हैं। उसे नए कपड़े मिलते हैं, घोड़े पर बिठाया जाता है और सुंदर सी दुल्हन भी मिलती है। मुझे भी दूल्हा बनना है, मुझे भी सेहरा सजाना है। बस, तुम मेरी शादी करवाओ, नहीं तो मैं आज से माखन नहीं खाऊंगा!"

'माखन नहीं खाऊंगा'—यह कान्हा का सबसे बड़ा हथियार था। जब भी उन्हें अपनी कोई बात मनवानी होती, वह माखन छोड़ने की धमकी दे देते थे।

### **राधा नाम पर रीझे कन्हैया**

यशोदा मैया समझ गई कि लल्ला ऐसे मानने वाला नहीं है। इसे प्यार से ही समझाना पड़ेगा। उन्होंने मुस्कराते हुए कान्हा को फिर पास बुलाया और पूछा, "अच्छा बाबा, ठीक है! रो मत। पर यह तो बता, तू शादी करेगा किससे? दुल्हन कहां है तेरी?"

कान्हा ने अपनी बड़ी-बड़ी आंखें मटकाईं और बोले, "मैया, दुल्हन तो तुम ढूंढोगी ना! जैसी सुंदर दुल्हन उस गोपा भैया की थी, वैसी ही मेरे लिए भी लाओ।"

मैया ने कान्हा को चिढ़ाने के लिए कहा, "अरे लल्ला, गोकुल में तो कोई लड़की मुझे तेरे लायक नहीं दिखती। तू इतना काला है, और दिनभर माखन चोरी करता है। भला तुझसे कौन शादी करेगा?"

यह सुनकर कान्हा ने तुरंत जवाब दिया, "मैया! मैं काला हूँ तो क्या हुआ? बरसाने की वो जो राधा है ना... वृषभानु जी की लाली, वो कितनी गोरी है! वह हमेशा मुझसे मिलने आती है। मैं तो उसी राधा से शादी करूंगा!"

राधा का नाम सुनते ही यशोदा मैया के चेहरे पर एक गहरी मुस्कान आ गई। राधा और कृष्ण की जोड़ी तो साक्षात् लक्ष्मी-नारायण जैसी थी। लेकिन मैया तो मां थीं, उन्हें तो बाल-लीला का आनंद लेना था।

### **मैया ने रखीं अनोखी शर्तें**

यशोदा मैया ने कान्हा के मजे लेने के लिए एक चाल चली। वह गंभीर होकर बोलीं, "देख कान्हा! शादी करना कोई बच्चों का खेल नहीं है। शादी के बाद बहुत सारी जिम्मेदारियां आती हैं। क्या तू वो सब पूरा कर पाएगा?"

कान्हा ने सीना तानकर कहा, "हां मैया! मैं सब करूंगा। बताओ, क्या करना होगा?"

मैया ने उंगलियों पर गिनवाते हुए कहा:

1. **पहली शर्त:** "शादी के बाद तुझे दिनभर गाय चरानी पड़ेगी, वो भी बिना थके। क्योंकि गृहस्थी चलाने के लिए काम करना पड़ता है।"
2. **दूसरी शर्त:** "तू जो रोज गोपियों के घरों से माखन चुराता है और मटकियां फोड़ता है, वो सब बंद करना पड़ेगा। नहीं तो तेरी दुल्हन क्या सोचेगी कि उसका पति चोर है?"
3. **तीसरी शर्त:** "शादी के बाद तुझे अपनी पत्नी के नखरे उठाने पड़ेंगे। वह जो कहेगी, वही करना पड़ेगा। क्या तू अपनी बंसी छोड़कर उसकी बातें सुनेगा?"

### कान्हा का मजेदार जवाब

मैया की शर्तें सुनकर कान्हा थोड़ी देर के लिए सोच में पड़ गए। उनका छोटा सा दिमाग दौड़ने लगा। फिर वह बोले:

"मैया! गाय तो मैं अभी भी चराता हूँ, तो आगे भी चरा लूंगा। और रही बात माखन चोरी की... तो मैं चोरी क्यों करूंगा? जब मेरी शादी राधा से हो जाएगी, तो राधा खुद अपने हाथों से मुझे ताजा-ताजा माखन खिलाएगी! फिर मुझे चोरी करने की क्या जरूरत?"

कान्हा की यह समझदारी देखकर यशोदा मैया दंग रह गईं।

फिर कान्हा ने तीसरी शर्त का जवाब दिया, "और मैया, तुम कहती हो कि मुझे उसके नखरे उठाने पड़ेंगे? अरे, मैं तो अपनी बंसी बजाकर उसे ऐसा रिझाऊंगा कि वह खुद मेरे आगे-पीछे घूमेगी! अब बताओ, कब ला रही हो मेरी दुल्हन?"

### नंद बाबा और बलराम जी की एंट्री

तभी वहां नंद बाबा और बड़े भाई बलराम (दाऊ) भी आ गए। उन्होंने कान्हा की आखिरी बात सुन ली थी।

बलराम जी हंसते हुए बोले, "क्यों मैया! हमारे कान्हा को इतनी जल्दी दूल्हा बनने का शौक क्यों चढ़ गया है? अभी कल ही तो यह घुटनों के बल चल रहा था, और आज इसे बारात ले जानी है?"

दाऊ को देखकर कान्हा ने कहा, "दाऊ! तुम बड़े हो तो क्या हुआ? तुम भी मेरी बारात में आगे-आगे नाचना। मैं घोड़े पर बैठूंगा और तुम नीचे पैदल चलना!" यह सुनकर नंद बाबा जोर से हंस पड़े और उन्होंने कान्हा को उठाकर गले से लगा लिया।

नंद बाबा बोले, "यशोदा! हमारे लल्ला की बात मान क्यों नहीं लेती? चलो, आज ही बरसाने संदेश भिजवाते हैं कि हमारे कान्हा के लिए अपनी राधा का हाथ दे दें"

यशोदा मैया ने हंसते हुए नंद बाबा को आंख मारी और कान्हा से बोलीं, "अच्छा लल्ला, एक आखिरी बात बताओ। शादी में दूल्हे को बहुत सारे गहने और भारी कपड़े पहनने पड़ते हैं। तू तो थोड़ी सी गर्मी में ही रोने लगता है, तो वो भारी मुकुट कैसे संभालेगा?"

कान्हा ने तुरंत अपने सिर पर हाथ रखा और बोले, "मुझे वो भारी मुकुट नहीं चाहिए मैया! मैं तो अपनी इस मोरपंख वाली पगड़ी को ही सेहरा बना लूंगा। और गहनों की जगह तुम्हारी प्रेम की माला पहन लूंगा। बस तुम जल्दी से हां कर दो!"